फ़ज़ाइले दुआ किताब से लिये गए मवाद की पांचवी क़िस्त

Kaun Si Duaa Nahin Karni Chahiye (Hindi)

कौन सी दुआ नहीं करनी चाहिये

कुल सफ़हात 22

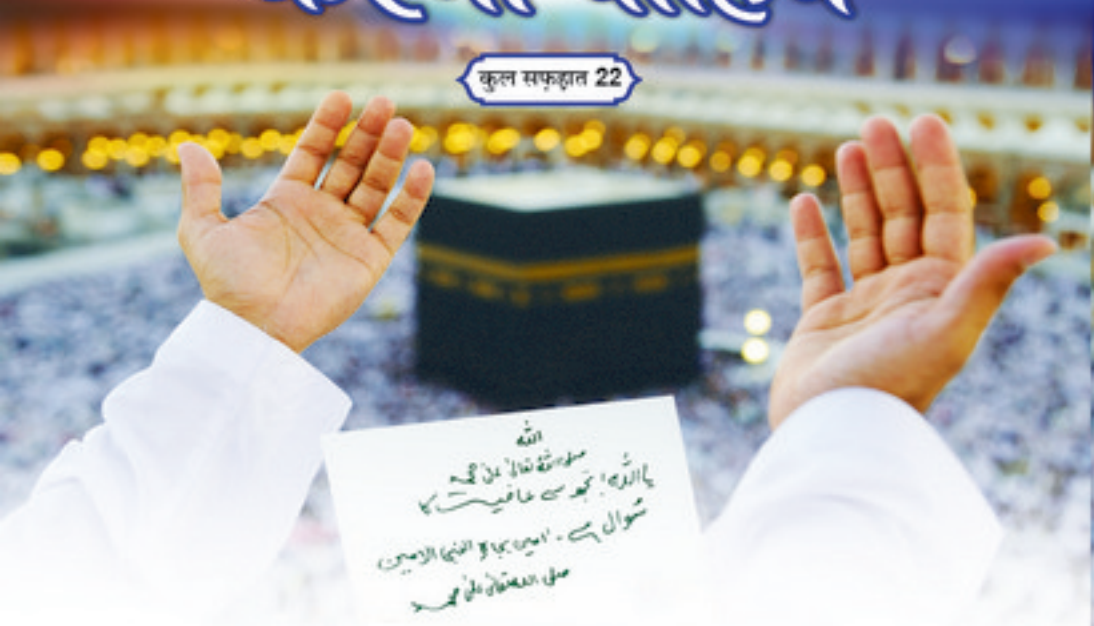

मुसन्निफ़ : रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رضی اللہ عنہ

शारेह : आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضی اللہ عنہ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ **:** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है **:**

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**कौन सी दुआ नहीं करनी चाहिये**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

यह मज़्मून "फ़ज़ाइले दुआ़" के सफ़्हा 172 ता 193 से लिया गया है।

कौन सी दुआ़ नहीं करनी चाहिये

दुआ़ए अ़त्तार

या रब्बे करीम ! जो कोई रिसाला : **"कौन सी दुआ़ नहीं करनी चाहिये"** के 24 सफ़्हात पढ़ या सुन ले उसे सहीह़ मा'ना में दुआ़ करना आ जाए और वोह बे हिसाब बख़्शा जाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ल्लामा **मजदुद्दीन फ़ीरोज़ आबादी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से **मन्क़ूल** है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد तो **अल्लाह** पाक तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص۲۷۸)

फ़स्ले हफ़्तुम किन किन बातों की दुआ़ न करनी चाहिये ?

قَالَ الرِّضَاء : इस में पन्दरह[15] मस्अले हैं, बारह[12] इर्शादे ह़ज़रत मुसन्निफ़े **अ़ल्लाम** और तीन **मुल्ह़क़ाते** फ़क़ीरे मुस्तहाम(1) ।ؒ

मस्अलए ऊला : दुआ़ में ह़द से न बढ़े, म–सलन : अम्बिया

(1) या'नी ह़ज़रते मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के बारह इर्शादात के साथ इस फ़क़ीर की तीन गुज़ारिशात।

عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना, इसी त़रह़ जो चीज़ें मुह़ाल[1] (ना मुम्किन) या क़रीब ब मुह़ाल हैं न मांगे।[2] ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ﴾.

قال الرضاء : "दुर्रे मुख़्तार" वग़ैरा में इसी क़बील से गिना : हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी का उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़ना भी मुह़ाले आ़दी[3] है।[4]

أقول : मगर ह़दीस शरीफ़ में है :

((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ وَتَمَامَ الْعَافِيَةِ وَدَوَامَ الْعَافِيَةِ)).

"इलाही ! मैं तुझ से मांगता हूं आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत की तमामी और आ़फ़िय्यत की हमेशगी।"[5]

मगर येह कि "تَمَامَ الْعَافِيَةِ" से दीनो दुन्या व रूह़ व जिस्म की आ़फ़िय्यत हर बला से मुराद हो जो ह़क़ीक़तन बला है, या ना क़ाबिले बरदाश्त अगर्चे ब नज़र अज्र व जज़ा, ने'मत व अ़त़ा है।[6] दीन में

---

❶ **मुह़ाल :** जिस का वुजूद बिदा-हतन मु-तसव्वर न हो जैसे जिस्म का ह़-र-कत व सुकून से आ़री होना या नज़री त़ौर पर ग़ैर मु-तसव्वर हो जैसा कि शरीके बारी तआ़ला का वुजूद। ("अल मोअ़-त-क़दुल मुन्तक़द" (मुतर्जम) स. 34)

मुह़ाल की तीन क़िस्में हैं : (1) मुह़ाले अ़क़्ली (2) मुह़ाले शर-ई (3) मुह़ाले आ़दी

इस बारे में मज़ीद तफ़्सील के लिये "**अल मोअ़-त-क़दुल मुन्तक़द**" मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

❷ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह पसन्द नहीं रखता ह़द से बढ़ने वालों को।" (ب: ٢، البقرة: ١٩٠)

❸ मुह़ाले आ़दी से मुराद येह है कि उ़मूमन या आ़दतन ऐसा होता न हो मगर उस का होना ना मुम्किन भी न हो, कभी किसी ह़िक्मत के तह़्त हो भी सकता हो, मसलन किसी शख़्स का हमेशा के लिये सिह़्ह़त मन्द रहना बीमार न पड़ना।

❹ "الدرّ المختار"، كتاب الصلاة، ج٢، ص٢٨٧

❺ "جامع الأحاديث" للسيوطي، المسانيد والمراسيل، مسند علي بن أبي طالب، الحديث: ٦٠٢٨، ج١٥، ص٣٤٣

❻ मगर येह कि यहां ह़दीसे पाक में "تَمَامَ الْعَافِيَةِ" से दीन व दुन्या और जिस्म व रूह़ का हर बला से महफ़ूज़ होना मुराद है या फिर ना क़ाबिले बरदाश्त बलाओं से महफ़ूज़ होना मुराद है अगर्चे इस पर सब्र करना भी अज्रो सवाब का बाइ़स है, मुख़्तसर येह कि "تَمَامَ الْعَافِيَةِ" से हर त़रह़ की बला से महफ़ूज़ होना हरगिज़ मुराद नहीं क्यूं कि बा'ज़ बलाएं, मसलन : हलका बुख़ार, ज़ुकाम और दर्दे सर वग़ैरा मुसीबत व बला नहीं बल्कि एक त़रह़ की ने'मत हैं जैसा कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة आगे ख़ुद वज़ाह़त फ़रमा रहे हैं।

www.dawateislami.net

अ़क़ीदतन व अ़मलन किसी क़िस्म का नक़्स मुत्लक़न बला है और रूह़ पर ग़म व फ़िक्रे उ़क़्बा के सिवा (आख़िरत की फ़िक्र के इ़लावा) और हर ग़म व परेशानी मुत्लक़न रन्ज व अ़ना है (या'नी रन्ज व तक्लीफ़ है) और जिस्म के ह़क़ में कभी कभी हलका बुख़ार, ज़ुकाम, दर्दे सर और इन के मिस्ल हलके अमराज़ बला नहीं ने'मत हैं बल्कि इन का न होना बला है मर्दाने ख़ुदा पर अगर चालीस दिन गुज़रें कि कोई इ़ल्लत व क़िल्लत न पहुंचे (या'नी बीमारी व परेशानी न आए) तो इस्तिग़्फ़ार व इनाबत फ़रमाते हैं (या'नी तौबा करते और रुजूअ़ लाते हैं) कि मबादा बाग ढीली न कर दी गई हो (या'नी ख़ुदा न ख़्वास्ता तवज्जोह न हटा ली गई हो) । हां ! सख़्त अमराज़ मिस्ले जुनून व जुज़ाम व बरस व कूरी (अन्धा पन) व त़ाऊ़न[1] या सांप का काटना, जलना, डूबना, दबना, गिरना وأمثال ذلک (और इसी की मिस्ल दूसरी बीमारियां) अगर्चे मुसल्मान

---

❶ **जुनून :** "जुनून ऐसे दिमाग़ी ख़लल और ह़रज को कहते हैं कि आ़म तौ़र पर अपने मा'मूल के मुत़ाबिक़ आदमी के अक़्वाल व अफ़्आ़ल बाक़ी न रह सकें, चाहे येह कैफ़िय्यत फ़ित़री और पैदाइशी तौ़र पर हो, या बा'द में किसी मरज़ की बिना पर ।" ("القاموس الفقهي"، ص٦٩)

जुज़ाम (कोढ़) **:** "एक मुतअ़द्दी मरज़ जिस में बदन सफ़ेद हो जाता है मरज़ की शिद्दत में आ'ज़ा भी गल जाते हैं ।" ("उर्दू लुग़त", जि. 6, स. 554)

बरस : वोह शदीद सफ़ेदी जो मुकम्मल बदन या इस के बा'ज़ ह़िस्सों पर होती है जो तमाम बदन में सरायत कर जाती और बढ़ती जाती है यहां तक कि वोह सफ़ेदी तमाम बदन को घेर लेती है, येह कमज़ोर और अपाहज कर देने वाली बीमारी है ।"

("الرحمة في الطب والحكمة" للسيوطي، الباب الثامن والأربعون والمئة، ص١٧٥)

त़ाऊ़न : एक वबाई मुतअ़द्दी बीमारी जिस में एक फोड़ा बग़ल या जांघ (या'नी रान) में निकलता है और इस के ज़हर से इन्सान बहुत कम जां बर होता है, इस में उ़मूमन क़ै, ग़शी और ख़फ़्क़ान (एक बीमारी जिस में दिल की धड़कन बढ़ जाती है) का ग़लबा रहता है, येह मरज़ पहले चूहों में फैलता है फिर इन्सानों में आता है, येह बीमारी पिस्सूओं (एक पर दार ज़हरीला कीड़ा जिस के काटने से बदन में खुजली होती है) के ज़रीए फैलती है । ("उर्दू लुग़त", जि. 13, स. 53)

त़ाऊ़न से भागने से मुतअ़ल्लिक़ इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का रिसाला : "تيسير الماعون للسكن في الطاعون" फ़तावा रज़विय्या की जिल्द 24 सफ़ह़ा 285 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

www.dawateislami.net

के कफ़्फ़ारए ज़ुनूब (या'नी गुनाहों का कफ़्फ़ारा) व बाइ़से अज्रो शहादत व रह़मत हैं ज़रूर बला और [1] ﴿لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ﴾ में दाख़िल हैं। व लिहाज़ा इन से आ़फ़िय्यत मांगी गई और इसी लिये ह़दीस शरीफ़ में : [2] ((أَعُوْذُ بِكَ مِنْ سَيِّءِ الْأَسْقَامِ)) बुरे अमराज़ की क़ैद लगा कर पनाह त़लब की तो "تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَدَوَام" का येही **मह़मल** और कलामे फ़ु-क़हा से तनाफ़ी ज़ाइल[3]

इसी त़रह़ अ़ल्लामा क़राफ़ी व अ़ल्लामा लक़्क़ानी वग़ैरहुमा ने इसी से शुमार किया : दोनों जहां की भलाई मांगना या'नी अगर येह मक़्सूद हो कि दारैन की सब ख़ूबियां दे कि इन ख़ूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं जो इसे नहीं मिल सकते।[4]

और इसी में दाख़िल है ऐसे अम्र के बदलने की दुआ़ मांगना जिस पर क़लम जारी हो चुका, म-सलन : लम्बा आदमी कहे : मेरा क़द कम हो जाए, या छोटी आंखों वाला : मेरी आंखें बड़ी हो जाएं।

قال الرضاء : अगर्चे मुह़ाले अ़क़्ली के सिवा कि अस्लन सलाह़िय्यते क़ुदरत नहीं रखता, सब कुछ ज़ेरे क़ुदरते इलाह़िय्यह दाख़िल

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (बरदाश्त) न हो।" (پ٣، البقرة: ٢٨٦)

2 या'नी ऐ अल्लाह ! मैं बुरे अमराज़ से तेरी पनाह त़लब करता हूं।

"سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب في الاستعاذة، الحديث: ١٥٥٤، ج٢، ص١٣٢

3 हमारी मज़्कूरा बाला बह़स से वोह ह़दीसे पाक जिस में "इलाही ! मैं तुझ से मांगता हूं आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत की तमामी और आ़फ़िय्यत की हमेशगी" फ़रमाया गया और कलामे फ़ु-क़हा जो अभी "दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से गुज़रा कि "हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी का उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़ना भी मुह़ाले आ़दी है" के माबैन पैदा होने वाला येह ज़ाहिरी तआ़रुज़ दूर हो गया और येही "تَمَامَ الْعَافِيَةِ" का मफ़्हूम है कि ना क़ाबिले बरदाश्त बलाओं से ह़िफ़ाज़त रहे।

4 "أنوار البروق"، الفرق الثالث والسبعون والمائتان، القسم الثاني، ج٤، ص٤٥٣

www.dawateislami.net

है। मगर ख़िलाफ़े आ़दत बात की ख़्वास्त-गारी (दर-ख़्वास्त) सिर्फ़ ह़ज़राते अम्बिया व औलिया عَلَيۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को वक़्ते इज़्हारे मो'जिज़ा व करामत ब ग़-रज़े इर्शाद व हिदायत व इत्मामे हुज्जत (लोगों की हिदायत और उन पर हुज्जत क़ाइम करने के लिये) बि इज़्निल्लाहे तआ़ला जाइज़ है। औरों का आ़लमे अस्बाब में हो कर ऐसी बात मांगना अपनी ह़द से बढ़ना और जह्ल व सफ़ाहत में पड़ना है।

﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ﴾

"जैसे कोई अपने हाथ फैलाए बैठा है कि पानी ख़ुद उस के मुंह में पहुंच जाए और हरगिज़ न पहुंचेगा।" (پ۱۳، الرعد: ۱٤)

मस्अला 2 : लग़्व और बे फ़ाएदा दुआ़ न करे।

इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हिकायत करते हैं : बनी इस्राईल में एक शख़्स था सनोस[1] नामी, उसे हुक्म हुवा कि तीन³ दुआ़एं तेरी क़बूल होंगी अपनी औ़रत के लिये दुआ़ की तमाम बनी इस्राईल की औ़रतों से ज़ियादा ख़ूब सूरत हो गई ग़ुरूर व शुरूर करने और शोहर को सताने लगी एक दिन उस से ख़फ़ा हो कर कहा : ख़ुदा तुझे कुतिया कर दे उसी वक़्त कुतिया हो गई फिर बेटों की सिफ़ारिश से उस के लिये दुआ़ की : इलाही ! इसे अस्ली सूरत पर कर दे जो सूरत पहले थी वोही हो गई और तीनों दुआ़एं मुफ़्त ज़ाएअ़ हुईं।[2]

मस्अला 3 : गुनाह की दुआ़ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए या कोई फ़ाहिशा ज़िना करे कि गुनाह की त़लब भी गुनाह है।

---

1 قد وجدنا اسمه : بسوس.

2 "تفسير البغوي"، الأعراف، تحت الآية: ۱۷٥، ج۲، ص۱۸۰.

و "تفسير الخازن"، الأعراف، تحت الآية: ۱۷٥، ج۲، ص۱٦۰.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 : क़त़ए़ रेह़्म (या'नी अ़ज़ीज़ों से तअ़ल्लुक़ तोड़ने) की दुआ़ न करे, म–सलन **:** फुलां व फुलां रिश्तादारों में लड़ाई हो जाए।

ह़दीस में है **:** "मुसल्मान की दुआ़ क़बूल होती है, जब तक ज़ुल्म व क़त़ए़ रेह़्म की दर–ख़्वास्त न करे।[1]"

قال الرضاء : क़त़ए़ रेह़्म भी एक क़िस्मे इस्म है (या'नी गुनाह की क़िस्म है), जिसे ब वज्हे शिद्दते एहतिमामे अह़ादीस, बाब में इस्म पर अ़त़्फ़ फ़रमाया **:** ((ما لم يدع بإثم أو قطيعة رحم)) (जब तक गुनाह या क़त़ए़ रेह़्म की दुआ़ न करे)[2] इसी लिये मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ब इत्तिबाए़ अह़ादीस इसे मस्अलए जुदागाना ठहराया।

मस्अला 5 : अल्लाह तआ़ला से ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्दगार ग़नी है, अगर तमाम ख़ल्क़ को एक साअ़त में उन के ह़ौसले से ज़ियादा बख़्शे, उस के ख़ज़ाने में कुछ नुक़्सान न हो।

ह़ज़रत इमामुल मुर–सलीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **:** "जब मांगो ख़ुदा से तो फ़िरदौस मांगो कि वोह औसत़ बिहिश्त और आ'ला जन्नत है और उस के ऊपर है अ़र्श रह़मान का, और उसी से जारी होती हैं नहरें बिहिश्त की।"[3]

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما جاء أنّ دعوة المسلم مستجابة، الحديث: ٣٣٩٢، ج٥، ص٢٤٨.

2 المرجع السابق.

3 "صحيح البخاري"، كتاب التوحيد، باب: ﴿وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ﴾، الحديث: ٧٤٢٣، ج٤، ص٥٤٧.

www.dawateislami.net

और येह भी आया है : "जब तू दुआ़ मांगे बहुत मांग कि तू करीम से मांगता है।"[1]

ऐ अ़ज़ीज़ ! वोह करीम व रह़ीम है, बे मांगे करोड़ों ने'मतें तेरे ह़ौसला व लियाक़त से ज़ियादा तुझे अ़त़ा करता है। अगर तू उस से मांगेगा क्या कुछ न पाएगा। ولنعم ما قيل (और क्या ही ख़ूब कहा गया है)

آنکہ ناخواستہ عطا بخشد
گر تو خواہش کنی چہا بخشد[2]
بادشاہے ست او اگر خواہد
ہر دو عالم بیک گدا بخشد[3]

और वोह जो ह़दीस में है कि "जूते का दुवाल (तस्मा) टूटे तो वोह भी खु़दा से मांग"[4] और बा'ज़ मुख़ा-त़बाते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में है : "हांडी

---

1 "صحيح ابن حبان"، كتاب الأدعية، ذكر استحباب الإكثار في السؤال ...إلخ، الحديث: ٨٨٦، ج٢، ص١٢٤، بألفاظ متقاربة.

2 *बिन मांगे अ़त़ा फ़रमाता है मह़रूम कभी फैरा ही नहीं*
फ़रियाद अगर तू कर ले कभी फिर देख अ़त़ाओं की बारिश

3 *तू बादशाह है ऐ मेरे मालिक ! गदा को तू*
अगर चाहे अ़त़ा कर दे दो आ़लम आने वाह़िद में

4 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ليسأل أحدكم ربه حاجته كلها، الحديث: ٣٦٢٣، ج٥، ص٣٤٩.

www.dawateislami.net

का नमक भी मुझ से मांग।[1]'' मत़लब इस का येह है कि तमाम तवज्जोह अपनी मेरी त़रफ़ रख ग़ैर से अस्लन तअ़ल्लुक़ न कर, जो मांग मुझ ही से मांग, अगर अह़यानन (कभी कभार) किसी ख़सीस (कमतर और ह़क़ीर) चीज़ की ज़रूरत हो, मुझ से सुवाल कर न येह कि ख़सीस ही सुवाल किया कर, और तह़क़ीक़ येह है कि येह अम्र ब इख़्तिलाफ़े अह़वाल मुख़्तलिफ़ है जिस वक़्त ख़ुदा के उ़मूमे करम व क़ुदरत और अपनी आ़जिज़ी व एह़तियाज पर नज़र हो और बा वुजूद इस के ख़सीस ह़क़ीर चीज़ की ज़रूरत हो, दूसरे से सुवाल करना और ग़ैर के सामने हाथ फैलाना क़बूल न करे, इस क़िस्म का सुवाल ख़ुदा से मुज़ा-यक़ा नहीं रखता, हां बिला ज़रूरत ख़सीस चीज़ मांगना ह़माक़त है, उ़म्दा शै मांगे कि ख़ुदा करीम है और हर चीज़ पर क़ादिर।

قال الرضاء : दुन्या ज़लील और इस की तमाम मताअ़ बआं कसरत (बा वुजूद बहुत होने के) निहायत क़लील[2] ﴿قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ﴾ वोह मुसल्मान के लिये ज़ादे मुसाफ़िर (तोशए मुसाफ़िर) है और ज़ाद ब क़दरे ह़ाजत दरकार होता है न लादने को, व लिहाज़ा इस में ज़ियादा की हवस कसरत की त़लब मबग़ूज़ (ना पसन्द) ठहरी ﴿اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ﴾[3]

और बे ज़रूरते शर-इ़य्या ग़ैरों के दरवाज़े पर भीक मांगने की इजाज़त नहीं तो अब ह़ाजत मौजूद और ग़ैर से मांगना ना मह़मूद और ज़ियादा की हवस भी मरदूद, **ला जरम** (यक़ीनन) नमक की कंकरी भी

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ليسأل أحدكم ربه حاجته كلها، الحديث: ٣٦٢٤، ج٥، ص٣٤٩.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरतना थोड़ा है।'' (پ٥، النساء: ٧٧)

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़-लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।'' (پ٣٠، التكاثر: ١-٢)

www.dawateislami.net

रब ही से मांगेंगे और उस की जगह येह न कहेंगे कि नमक का पहाड़ दे दे या पैसे की ज़रूरत है तो करोड़ रुपै दे दे कि एक पैसा और करोड़ अशरफ़ी ज़लील व क़लील होने में दोनों बराबर हैं, येह "كرّ إلى ما منه فرّ"[1] हो जाएगा। ब ख़िलाफ़ नईमे आख़िरत (आख़िरत की ने'मतों के) कि इस में ज़ियादत मत्लूब व मक़्सूद और अ़ताए करीम ग़ैर महदूद फिर क्यूं कम पर क़नाअ़त करें ! وَلِلّٰهِ الْحَمْد

मस्अला 6 : रन्ज व मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ़ न करे कि मुसल्मान की ज़िन्दगी उस के हक़ में ग़नीमत है।

अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : एक शख़्स शहीद हुवा, बरस दिन बा'द (एक साल बा'द) उस का भाई भी मर गया। तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़्वाब में उस को देखा कि शहीद से बिहिश्त में आगे जाता है, ख़्वाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बयान किया और उस की पेश क़दमी (शहीद से आगे जाने) पर तअ़ज्जुब किया, फ़रमाया : जो पीछे मरा, क्या उस ने एक र-मज़ान का रोज़ा न रखा ! और एक साल की नमाज़ अदा न की ! या'नी मक़ामे तअ़ज्जुब नहीं कि इस की इबादत उस की इबादत से ज़ियादा है।[2]

ऐ अ़ज़ीज़ ! वहां के लिये क्या जम्अ़ किया कि यहां से भागता है ? अगर मौत की शिद्दत व सख़्ती से वाक़िफ़ हो तो आरज़ू करे, काश ! तमाम दुन्या की तक्लीफ़ मुझ पर हो और चन्द रोज़ मौत से मोहलत मिले।

---

1 आस्मान से गिरा खजूर में अटका। या'नी एक मुसीबत से छूटा दूसरी में जा फंसा।

2 "سنن ابن ماجه"، كتاب تعبير الرؤيا، باب تعبير الرؤيا، الحديث: ٣٩٢٥، ج٤، ص٣١٣ و"المسند" للإمام لأحمد بن حنبل، الحديث: ٨٤٠٧، ج٣، ص٢٢٩.

www.dawateislami.net

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : रन्ज के सबब से मौत की आरज़ू न करो, अगर नाचार हो जाओ कहो :

((اَللّٰهُمَّ أَحْيِنِيْ مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّيْ وَتَوَفَّنِيْ إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّيْ))

''ख़ुदाया मुझे जिन्दा रख जब तक ज़िन्दगी मेरे ह़क़ में बेहतर है और मुझे वफ़ात दे जिस वक़्त मौत मेरे ह़क़ में बेहतर हो।''(1)

एक शख़्स ने पूछा : बेहतर लोगों का कौन है ? (या'नी लोगों में से बेहतरीन शख़्स कौन है ?) फ़रमाया : ''जिस की उ़म्र दराज़ हो और काम अच्छे।'' अ़र्ज़ की : बदतर लोगों का कौन है ? फ़रमाया : ''जिस की उ़म्र बड़ी हो और काम बुरे।''(2)

पस नेकूकार के वासिते ज़िन्दगी ने'मत और बदकार के लिये ज़िन्दगी निक़्मत (सज़ा), मगर तमन्ना मौत की इस ख़याल से कि जिस क़दर जियूंगा (ज़िन्दा रहूंगा) ज़ियादा गुनाह करूंगा, नादानी है, अगर गुनाहों को बुरा जानता है तो उन के तर्क पर मुस्तइ़द (तय्यार) हो(3) और उ़म्रे दराज़ त़लब करे ता (कि) इ़बादत व रियाज़त से उन का तदारुक (तलाफ़ी) करे ﴿اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ﴾(4)

---

1 "سنن النسائي"، كتاب الجنائز، باب تمني الموت، الحديث: ١٨١٧-١٨١٨، ص٣١١.
و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ١١٩٧٩، ج٤، ص٢٠٢.

2 "سنن الترمذي"، ابواب الزهد، باب منه، ج٤، ص١٤٨، الحديث: ٢٣٣٧.

3 या'नी : अगर गुनाहों को बुरा जानता है तो गुनाह छोड़ने पर कमर बस्ता हो।

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।'' (پ١٢، هود: ١١٤)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते मरयम سَلَامُ اللهِ عَلَيْهَا का फ़रमाना : ﴿يٰلَيْتَنِیْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ كُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا﴾ [1] दुआ़ ब हलाक नहीं बल्कि आरज़ू और तमन्ना ज़मानए माज़ी की है और ''रन्ज व मुसीबत से घबराने'' की क़ैद इस लिये हम ने ज़िक्र की, कि येह दुआ़ (या'नी मरने की दुआ़) ब सबबे शौक़े वस्ले इलाही व इश्तियाक़े लिक़ाए सालिह़ीन दुरुस्त है।

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दुआ़ करते हैं :

﴿تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ﴾ [2]

इसी त़रह़ जब दीन में फ़ितना देखे तो अपने मरने की दुआ़ जाइज़ है।

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल है :

((إذا أردتَ بقوم فتنة فاقبضني إليک غير مفتون)). [3]

ह़दीस में है : फ़रमाते हैं : ''कोई तुम से मौत की आरज़ू न करे मगर जब कि ए'तिमाद नेकी करने पर न रखता हो।'' [4]

---

1 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''हाए किसी त़रह़ मैं इस से पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती।'' (پ١٦، مريم: ٢٣)

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''मुझे मुसल्मान उठा और उन से मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं।'' (پ١٣، يوسف: ١٠١)

3 ऐ अल्लाह ! जब तू किसी क़ौम के साथ अ़ज़ाब व गुमराही का इरादा फ़रमाए (उन के आ'माले बद के सबब) तो मुझे बिग़ैर फ़ितने के अपनी त़रफ़ उठा।

"سنن الترمذي"، كتاب تفسير القرآن، باب ومن سورة ص، الحديث:٣٢٤٦، ج٥، ص١٦١.

4 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٨٦١٥، ج٣، ص٢٦٣.

www.dawateislami.net

قال الرضاء : खुलासा येह कि दुन्यवी मुज़र्रतों से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मुज़र्रत (दीनी नुक़्सान) के ख़ौफ़ से जाइज़ كما في "الدرّ المختار" و"الخلاصة" وغيرهما.﴾[1]

मस्अला 7 : बे ग़-रज़े सहीह़ शर-ई किसी के मरने और ख़राबी की दुआ न मांगे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((إذا سمعتم الرجل يقول هلک الناس فهو أَهلکُهم)).

''जब सुनो तुम किसी मर्द को कि कहता है लोग हलाक हों[1] तो वोह सब से ज़ियादा हलाक होने वाला है।''[2]

ह़दीस शरीफ़ में है : एक शराबी को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर लाए हुज़ूर ने ह़द मारने का हुक्म दिया कोई उस के धोल मारता (या'नी थप्पड़ लगाता), कोई जूते, फ़रमाया : ''इस की मलामत करो'' किसी ने कहा : तुझ को ख़ुदा का ख़ौफ़ न आया, किसी ने कहा : तू रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से न शरमाया, एक ने कहा : أَخْزَاکَ اللهُ ''ख़ुदा तुझे ख़्वार करे''

---

1 "الدر المختار"، كتاب الحظر والإباحة، فصل في البيع، ج٩، ص٦٩١.

و"خلاصة الفتاوى"، كتاب الكراهية، الفصل الثاني في العبادات، ج٤، ص٣٤٠.

و"الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الثلاثون في المتفرقات، ج٥، ص٣٧٩.

1. या'नी जो शख़्स औरों की हलाकत व ख़राबी चाहता है वोह सब से ज़ियादा हलाक व ख़राब होता है और बा'ज़ هلک الناس को जुम्लए ख़-बरिय्या कहते हैं। या'नी जो औरों को हलाकत में मुब्तला व बुरा और अपने आप को उन से बड़ा जानता है, वोह सब से ज़ियादा हलाकत में मुब्तला और बुरा है। ١٢منه قُدِّسَ سِرُّهُ .وَاللهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٧٦٨٩، ج٣، ص١٠٢.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "येह न कहो बल्कि कहो : ((اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَهٗ اَللّٰھُمَّ ارْحَمْهُ)) "खु़दाया ! इस को बख़्श दे, खु़दाया ! इस पर रह़्म फ़रमा।"[1]

तु़फै़ल बिन अ़म्र दौसी ने अपनी क़ौम की शिकायत की और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! दौस पर दुआ़ कीजिये[2] फ़रमाया :

((اللّٰهم اهد دَوساً وآت بهم))

---

1 "سنن أبي داود"، باب في الحد في الخمر، الحديث: ٤٤٧٧-٤٤٧٨، ج٤، ص٢١٦-٢١٧.

2 ह़ज़रते तु़फै़ल बिन अ़म्र दौसी यमन के मश्हूर क़बीले दौस के फ़र्द थे, येह मक्के ही में ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुके थे, और इस के बा'द अपने वत़न वापस गए और अ़र्सा तक वहीं रहे, ख़ैबर के मौक़अ़ पर अपने मुत्तबिई़न के साथ ख़ैबर ही में ह़ाज़िर हुए फिर मदीनए त़य्यिबा में रहने लगे, जंगे यमामा में शहीद हुए, इन का ख़ित़ाब "ज़ुन्नूर" भी है, इन्हों ने इस्लाम क़बूल करते वक़्त येह अ़र्ज़ किया था : मुझे दौस की त़रफ़ भेजिये और मुझे कोई निशानी अ़त़ा फ़रमाइये जिस से उन्हें हिदायत नसीब हो, हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : ऐ अल्लाह ! इसे नूर अ़त़ा फ़रमा, इस दुआ़ की ब-र-कत से इन की दोनों आंखों के दरमियान एक नूर चमक्ता था, इन्हों ने अ़र्ज़ की : मुझे अन्देशा है कि वोह लोग येह कहें कि इस की सूरत बिगड़ गई है तो येह रोशनी इन के कोड़े के कनारे मुन्तक़िल हो गई, इन का कोड़ा अंधेरी रात में चमक्ता था इसी लिये इन का नाम "ज़ुन्नूर" पड़ा। इन की येह अ़र्ज़ दाश्त (या'नी दौस की हलाकत की दुआ़ की दर-ख़्वास्त) दोबारा ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर थी जब कि वोह ख़ैबर में अपने अस्सी80 या नव्वे90 साथियों के साथ ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए थे, इन्हों ने येह भी अ़र्ज़ किया था कि दौस में ज़िना और सूद आ़म है इन की हलाकत की दुआ़ कीजिये (तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की हिदायत की दुआ़ फ़रमाई)।

("نزهة القاري"، كتاب الجهاد، باب الدعاء على المشركين... إلخ، ج٦، ص٢٢٧)

www.dawateislami.net

''ख़ुदाया ! दौस को हिदायत फ़रमा और उन को यहां ले आ ।''[1]

इसी त़रह़ जब सक़ीफ़[2] के पथ्थरों से बहुत मुसल्मान शहीद हुए सह़ाबा ने गुज़ारिश की इन पर दुआ़ कीजिये । फ़रमाया :

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب الدعاء للمشركين بالهدى ليتألفهم، الحديث: ٢٩٣٧، ج٢، ص٢٩١.

2 येह भी अ़रब के एक क़बीले का नाम है।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के साथ त़ाइफ़ का क़स्द किया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वहां पहुंच कर अशराफ़े सक़ीफ़ या'नी अ़ब्दे यालील बिन अ़म्र बिन उ़मैर और उस के भाई मस्ऊ़द और ह़बीब को इस्लाम की दा'वत दी मगर उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दा'वत का बुरी त़रह़ जवाब दिया, एक बोला : अगर आप को ख़ुदा ने पैग़म्बर बनाया है तो वोह का'बे का पर्दा चाक कर रहा है, दूसरे ने कहा : क्या ख़ुदा को पैग़म्बरी के लिये आप के सिवा कोई न मिला ? तीसरे ने कहा : मैं हरगिज़ आप से कलाम नहीं कर सकता, अगर आप पैग़म्बरी के दा'वे में सच्चे हैं तो आप से गुफ़्त-गू करना ख़िलाफ़े अदब है और अगर झूटे हैं तो क़ाबिले ख़ित़ाब नहीं, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मायूस हो कर वापस हुए तो उन्हों ने कमीने लोगों और ग़ुलामों को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उभारा जो आप के लिये इन्तिहाई नाज़ैबा और गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कहते और तालियां बजाते, इतने में लोग जम्अ़ हो गए और उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दोनों त़रफ़ सफ़ें बांध लीं जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दरमियान से गुज़रे तो क़दमे मुबारक उठाते वक़्त आप के मुक़द्दस क़दमों पर पथ्थर बरसाने लगे यहां तक कि ना'लैने मुबारक ख़ून से भर गए, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पथ्थरों का सदमा पहुंचता तो बैठ जाते, मगर वोह बाज़ू थाम कर खड़ा कर देते, जब चलने लगते तो पथ्थर बरसाते और साथ साथ हंसते जाते, उ़त्बा और शैबा आप के सख़्त दुश्मन थे मगर आप की इस ह़ालत पर उन के दिल भी नर्म पड़ गए।

(ماخوذ من "السيرة الحلبية"، باب ذكر خروج النبي صلى الله عليه وسلم إلى الطائف، ج١، ص٤٩٨-٤٩٩. و"السيرة النبوية" لابن هشام، ص١٦٧)

www.dawateislami.net

((اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا))

''ख़ुदाया ! सक़ीफ़ को हिदायत फ़रमा ।''[1]

जंगे उहुद में ज़ालिमों ने दन्दाने मुबारक संगे सितम से शहीद किया और कुफ़्फ़ारे ताइफ़ ने हुज़ूर के जिस्मे नाज़नीन पर इस क़दर पथ्थर मारे कि पाश्नए मुबारक (या'नी एड़ियां मुबारक) ख़ून से आलूदा हुए मगर उन पर भी दुआए हलाक व ख़राबी न की हुज़ूर अगर चाहते वोह सब हलाक हो जाते ।

अ़तिय्या [2] ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ﴾ की तफ़्सीर में कहते हैं : ''مُعْتَدِيْن'' से वोह लोग मुराद हैं जो लोगों के कोसने में ह़द से बढ़ते और कहते हैं : अल्लाह उन को ख़्वार करे, अल्लाह उन पर ला'नत करे ।[3]

मौलाना या'क़ूब चर्ख़ी आयए करीमा : [4] ﴿فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ﴾

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب المناقب، باب في ثقيف وبني حنفية، الحديث: ٣٩٦٨، ج٥، ص٤٩٢.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं ।''

(پ٨، الأعراف:٥٥)

3 "تفسير البغوي"، پ٨، الأعراف، تحت الآية: ٥٥، ج٢، ص١٣٨.

وجدنا هذا القول تحت الآية: ﴿اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ﴾.

4 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''तो उसे उस के रब ने चुन लिया और अपने क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों (ह़क़दारों) में कर लिया ।''

(پ٢٩، القلم: ٥٠)

www.dawateislami.net

की तफ़्सीर में लिखते हैं : नसीब आ़रिफ़ का येह है कि बलाओं में सब्र करे और मुन्किरों के इन्कार से मु-तग़य्यर न हो बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करे कि फ़रमाते थे :

((اَللّٰهم اهد قومي فإنّهم لا يعلمون)) ''ख़ुदाया ! मेरी क़ौम को हिदायत फ़रमा कि वोह जानते नहीं।''

हां अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और जीने से दीन का नुक़्सान हो या किसी ज़ालिम से उम्मीद तौबा और तर्के ज़ुल्म की न हो और उस का मरना, तबाह होना ख़ल्क़ के हक़ में मुफ़ीद हो, ऐसे शख़्स पर बद दुआ़ दुरुस्त है।

सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब देखा कि क़ौम के सरकश अपने कुफ़्रो इ़नाद से बाज़ न आएंगे और वद व सुवाअ़ व यग़ूस व यऊ़क़ व नस्र को न छोड़ेंगे,[1] जनाबे इलाही में अ़र्ज़ की :

﴿رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا﴾

''ख़ुदाया ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई घर वाला न छोड़।'' (پ۲۹، نوح: ۲۶)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़िब्ति़यों पर दुआ़ की :

﴿رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ﴾

''ख़ुदाया ! इन के माल मिटा दे और इन के दिलों पर सख़्ती कर कि

---

1 ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम इन की पूजा करती और इन की इ़बादत छोड़ने पर तय्यार न थी, सूरए नूह़ की आयत नम्बर 23 में इन का बा क़ाइ़दा ज़िक्र मौजूद है। मज़ीद तफ़्सील के लिये ''ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान'', स. 686, ''नूरुल इ़रफ़ान'', स. 912 और ''फ़तावा र-ज़विय्या'' जिल्द 24, स. 573 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

वोह ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देखें।" (پ۱۱، یونس: ۸۸)

और इसी क़िस्म के अग़राज़ के वासिते हमारे पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से भी अह़यानन (कभी कभार) बा'ज़ कुफ़्फ़ार पर दुआ करना साबित है।

قال الرضاء : बा'ज़ उन में से ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने "سُرُوْرُالْقُلُوْبِ فِيْ ذِكْرِ الْمَحْبُوْبِ" के बाब मो'जिज़ात में ज़िक्र फ़रमाई।[1]

मस्अला 8 : किसी मुसल्मान को येह बद दुआ न करे कि तू काफ़िर हो जाए, कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक कुफ़्र है और तह़क़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे, बिला रैब (या'नी बिला शक व शुबा) कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसल्मान की बद ख़्वाही (मुसल्मान का बुरा चाहना) ह़राम है, ख़ुसूसन येह बद ख़्वाही कि सब बद ख़्वाहियों से बदतर है।

मस्अला 9 : किसी मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्ऊ़न न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे, यहां तक कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक मुस्तह़िक़े ला'नत पर भी ला'नत न कहे[2] यूं ही मच्छर और हवा और जमादात व ह़ैवानात[1] पर भी ला'नत मम्नूअ़ है।

---

1 "سرور القلوب"، معجزاتِ مصطفى صلى الله تعالى عليه وسلم، ص ٣١٥-٣١٦.

2 "منح الروض الأزهر" للقارئ، الكبيرة لا تخرج المؤمن عن الإيمان، ص ٧٢.

و"أشعة اللمعات"، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان من الغيبة والشتم، ج ٤، ص ٧١

1 मगर बिच्छू वग़ैरा बा'ज़ जानवरों पर ह़दीस में ला'नत आई है। ۱۲منه قُدِّسَ سِرُّهٗ

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''मुसल्मान बहुत ता'न[1] करने वाला और ला'न करने वाला और फ़ोहूश व बेहूदा बकने वाला नहीं होता।''(1)

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : ''बहुत ला'नत करने वाले क़ियामत के दिन गवाह व शफ़ीअ़ न होंगे।''(2)

---

[1] في رواية "الترمذي": ((**لا يكون المؤمن لعّاناً**)).

("سنن الترمذي"، باب ما جاء في اللعن والطعن، الحديث: ٢٠٢٦، ج٣، ص٤١٠).

وفي أخرى له: ((**لا ينبغي للمؤمن أن يكون لعّاناً**)).

("سنن الترمذي"،باب ما جاء في اللعن والطعن، الحديث: ٢٠٢٦، ج٣، ص٤١٠).

وروى أيضاً: ((**المسلم ليس بلعّان**)).

("سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في اللعنة، الحديث: ١٩٨٤، ج٣، ص٣٩٣، بألفاظ متقاربة. وفيه: ((ليس المؤمن بالطعان ولا اللعان)).

وللبخاري: **لم يكن رسول الله صلى الله عليه وسلم فاحشاً ولا لعّاناً.**

("صحيح البخاري"، باب ما ينهي من السباب واللعن، الحديث: ٦٠٤٦، ج٤، ص١١٢).

١٢منه قُدِّسَ سِرُّهٗ

(1) "سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ما جاء في اللعن والطعن، الحديث ١٩٨٤، ج٣، ص٣٩٣.

(2) "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة، باب النهي عن لعن الدواب وغيرها، الحديث ٢٥٩٨، ص١٤٠٠.

www.dawateislami.net

तीसरी ह़दीस शरीफ़ में है ''मुसल्मान की ला'नत मिस्ल उस के क़त्ल के है।''(1)

चौथी ह़दीस शरीफ़ में है ''जब बन्दा किसी पर ला'नत करता है, वोह ला'नत आस्मान की त़रफ़ चढ़ती है उस के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं कि यहां तेरी जगह नहीं, फिर ज़मीन की त़रफ़ उतरती है उस के दरवाज़े भी बन्द हो जाते हैं कि यहां तेरी जगह नहीं, फिर दाएं बाएं फिरती है जब कहीं ठिकाना नहीं पाती अगर जिस पर ला'नत की, ला'नत के लाइक़ है तो उस पर जाती है वरना कहने वाले की त़रफ़ पलट आती है।''(2)

और फ़रमाते हैं : ऐ औ़रतो ! स-दक़ा दो कि मैं ने तुम्हें दोज़ख़ में ब कसरत देखा या'नी औ़रतें दोज़ख़ में बहुत पाईं। अ़र्ज़ की : किस सबब से ? फ़रमाया : तुम ला'नत बहुत करती हो।(3)

इमाम ग़ज़ाली ''कीमियाए सआ़दत'' में नक़्ल करते हैं : एक शख़्स ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के वक़्त सो100 बार शराब पी, एक सह़ाबी ने उस पर ला'नत की और कहा : कब तक इस का फ़साद बाक़ी रहेगा ! हुज़ूर ने फ़रमाया : ''शैत़ान इस का दुश्मन मौजूद है वोह किफ़ायत करता है, तू ला'नत कर के शैत़ान का यार न हो।''(4)

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الأدب، باب ما ينهى من السباب واللعن، الحديث: ٦٠٤٧، ج٤، ص١١٢.

و"المعجم الكبير"، الحديث: ١٣٣٠، ج٢، ص٧٣.

2 "سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في اللعن، الحديث: ٤٩٠٥، ج٤، ص٣٦٢.

3 "صحيح البخاري"، كتاب الحيض، باب ترك الحائض الصوم، الحديث: ٣٠٤، ج١، ص١٢٣.

4 "کیمیائے سعادت"، اصل پنجم، باب اول، ج١، ص٣٧١.

www.dawateislami.net

और एक शख़्स ने शराब पी, लोग उस को मारते और ला'नत करते। फ़रमाया : ''ला'नत न करो कि वोह ख़ुदा व रसूल को दोस्त रखता है।''[1]

सुवाल : शर-अ़ शरीफ़ में ज़ालिमों और बियाज (सूद) खाने वालों और इस के मुआ़-मले में पड़ने वालों पर और उस शख़्स पर जो अपने मां बाप पर ला'नत करे और जो बिदअ़ती को जगह दे और जो ग़ैरे ख़ुदा के वासिते़ जानवर ज़ब्ह़ करे और सिवा इन के और गुनहगारों पर ला'नत वारिद है और अगले पैग़म्बर भी कुफ़्फ़ार पर ला'नत करते :

﴿لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ﴾[2]

और फ़िरिश्ते भी उन पर ला'नत किया करते हैं :

﴿اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا﴾[3]

---

1 "صحيح البخاري"، كتاب الحدود، باب ما يكره من لعن شارب الخمر، الحديث: ٦٧٨٠، ج٤، ص٣٣٠.

و"كيميائے سعادت"، ركن سوم، آفت هشتم، ج٢، ص٥٧٣.

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर।'' (پ٦، المائدة: ٧٨)

3 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''उन का बदला येह है कि उन पर ला'नत है अल्लाह और फ़िरिश्तों और आदमियों की सब की, हमेशा इस में रहें।'' (پ٣، ال عمران: ٨٧-٨٨)

www.dawateislami.net

जवाब : ला'नत लुग़त में ब मा'ना त़र्द व इब्आ़द (या'नी धुत्कार और दूरी) के है और अहले शरीअ़त कभी इस से त़र्द व इब्आ़दे रह़मते इलाही व बिहिश्त से, और कभी त़र्द व इब्आ़दे जनाबे क़ुर्ब और रह़मते ख़ास व द-र-जए साबिक़ीन से मुराद लेते हैं।[1]

पहले मा'नी काफ़िरों के लिये ख़ास हैं। जिस शख़्स का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी जैसे : अबू जह्ल, अबू लहब, फ़िरऔ़न, शैत़ान, हामान उस पर ला'नत जाइज़, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिन पर ला'नत करते थे, **ब ए'लामे** इलाही (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बताने से) उन के काफ़िर मरने से वाक़िफ़ थे और फ़िरिश्ते भी उन्हीं पर ला'नत करते हैं जिन की बद अन्जामी से **ब ए'लामे** इलाही वाक़िफ़ होते हैं या अम्बिया व मलाएका काफ़िरों पर ब वस्फ़े कुफ़्र ला'नत करते हैं या'नी : [2]﴿لَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ﴾ कहते हैं।

और **दूसरी क़िस्म** गुनहगारों को भी शामिल है, जिस जगह क़ुरआन या ह़दीस में लफ़्ज़े ला'नत का उ़साह (गुनहगारों) के ह़क़ में वारिद है वहां दूसरे मा'ना मुराद हैं, मगर जवाज़ इस क़िस्म का भी मुक़य्यद ब वस्फ़े आ़म मज़मूम है لَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰذِبِيۡنَ (झूटों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत)

---

1 लुग़त में "ला'नत" के मा'ना "दूरी" के हैं।

शरीअ़त की इस्ति़लाह़ में ला'नत के मा'ना दो[2] त़रह़ से बयान किये गए हैं :

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस की जन्नत से दूरी, तो किसी पर ला'नत करने के मा'ना कभी तो येह होंगे कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व जन्नत से दूर हो।

(2) और कभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब और उस की ख़ास रह़मतों से दूरी, या पिछले नेक बन्दों को उस की जनाब में जो मर्तबा मिला उस मर्तबे से दूरी मुराद होगी।

2 तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह की ला'नत मुन्किरों पर।" (پ ۱، البقرة: ۸۹)

www.dawateislami.net

और لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ (ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत) कह सकते हैं, किसी शख़्से ख़ास पर ला'नत नहीं कर सकते।

शैख़े मुह़क़्क़िक़[1] फ़रमाते हैं : "ला'नत करना किसी पर जाइज़ नहीं सिवा इस के जिस के काफ़िर मरने की मुख़्बिरे सादिक़ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने ख़बर दी, और काफ़िरे मख़्सूस पर कि ईमान उस का दमे अख़ीर मोहूतमल हो[2] ला'नत न करें।"

---

1 "أشعة اللمعات"، كتاب الآداب، باب حفظ اللسان من الغيبة والشتم، ج٤، ص٧١.

2 या'नी येह एह़तिमाल कि हो सकता है फ़ुलां काफ़िर मरते वक़्त ईमान ले आया हो।

बा'ज़ मक्कारे ज़माना इसी को बुन्याद बना कर भोले भाले मुसल्मानों को अपने दामे फ़रेब में लेने की कोशिश करते हैं कि "मियां ! काफ़िर को भी काफ़िर मत कहो ! क्या मा'लूम कब मुसल्मान हो जाए ?"

मक़ामे ग़ौर तो येह है कि पहले ख़ुद काफ़िर कह चुके, फिर कहते हैं काफ़िर मत कहो, ह़ालां कि ख़ुद क़ुरआने मजीद से इस बात की ताईद होती है कि काफ़िर को काफ़िर ही कहा जाए और मोमिन को मोमिन, क्या आप ग़ौर नहीं करते कि क़ुरआने पाक में काफ़िरों को काफ़िर कह कर पुकारा गया है बल्कि क़ुरआने पाक में एक मुकम्मल सूरत का नाम ही "सू-रतुल काफ़िरून" रखा गया है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कोई आ़क़िल शख़्स इस ह़क़ीक़त से इन्कार नहीं कर सकता कि जो शै जिस वक़्त जिस ह़ालत में हो उसे उस वक़्त उसी की जिन्स से पुकारा जाएगा, म-सलन : गन्दुम जब तक अपनी अस्ल ह़ालत पर बाक़ी है उसे गन्दुम ही कहा जाएगा और जब उसे पीस कर आटा कर दिया जाए तो फिर उसे कोई भी गन्दुम कहने को तय्यार नहीं होगा बल्कि आटा ही कहा जाएगा और जब उस आटे की रोटी बना ली जाए तो फिर उसे आटा नहीं बल्कि रोटी का नाम दिया जाएगा और जब उस रोटी को खा कर फ़ुज़्ले की शक्ल में ख़ारिज कर दिया जाए तो फिर उसे रोटी नहीं बल्कि फ़ुज़्ला कहा जाएगा, उस वक़्त इन ह़ज़रात को येह बातें नहीं सूझती कि गन्दुम को गन्दुम मत कहो क्या मा'लूम कब आटा हो जाए और आटे को आटा मत कहो क्या मा'लूम कब रोटी हो जाए वग़ैरा.....

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

"दिन" का ए'लान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : रोज़ाना सुब्ह जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उस वक़्त "दिन" येह ए'लान करता है : अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि आज के बा'द मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा।

(شعب الایمان، ۳/۳۸۶، حدیث: ۳۸۴۰)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net